HAPPY NAVRATI !!! DAY 3

May Durga bless you and your family with Her nine NAVRATRI prasads: 1. Shanti 2. Shakti 3. Saiyam 4. Sanmaan 5. Saralta 6. Safalta 7. Samridhi 8. Sanskaar 9. Swaasthya

Om Shanti Divine Angels!!!

Points to Churn: October 07, 2013

Knowledge: Jagadamba, the World Mother, means the one who creates the people of the world. They have created many different pictures in the name of Jagadamba. In fact, whether she is called Kali, Saraswati, Durga, there is only one Jagadamba.

Mansarovar means that the incorporeal Supreme Father, the Supreme Soul, the Ocean of Knowledge, enters a human body and speaks this knowledge. The Gita is the mother, the jewel, of all the scriptures. Baba has explained the point of the two fathers very clearly. You are to receive your inheritance of the Father's property.

Yoga: Manmanabhav! We, the souls, like very fast rockets, run fast in remembrance and reach the land of Shiva and the land of Vishnu in a second... ...we play an all-round part, and attain liberation and liberation-in-life... by being the spinners of the discus of self-realisation at the confluence age, we wear a crown, sit on a throne and remain under a canopy in the golden age...

Dharna: Never become tired of making effort. Be very cautious as you continue to follow shrimat. Never become confused. Never perform any sinful actions. In order to go to the true heaven, do the service of becoming pure and making others pure. The steps of the thoughts, Words and deeds should be placed in Father Brahma's footsteps. You have to make effort whilst living in a household.

Service: You have to do service. You have to become pure and also make your friends and relatives worthy. Tell them sweet things. Be sensible by serving with the sense of being trikaldarshi and the essence of spirituality in service

Points of Self Respect: Brahman...the mouth-born creations of Brahma...followers of Brahma...

ॐ शान्ति दिव्य फरिश्ते !!!

विचार सागर मंथन: October 07, 2013

बाबा की महिमा : राम...बेहद का बाप..... सुख दाता ... गॉड फादर ... निराकार... परमपिता परमात्मा... ज्ञान सागर...

ज्ञान : जगत अम्बा अर्थात् जगत के मनुष्यों को रचने वाली। जगत अम्बा के नाम से भी भिन्न-भिन्न अनेक चित्र बनाये हैं। वास्तव में है तो एक ही जगत अम्बा, उनको ही काली कहो, सरस्वती कहो, दुर्गा कहो, ढेर नाम रखे हैं ।

मानसरोवर अर्थात् निराकार परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर मनुष्य के तन में आकर यह ज्ञान सुनाते हैं। सर्व शास्त्रमई शिरोमणि गीता..... बाबा ने दो बाप की प्वाइन्ट बहुत अच्छी रीति समझाई है। वर्सा बाप से मिलता है जायदाद का।

योग : मनमनाभव ! हम तीखी रॉकेट मिसल आत्माएँ, याद में तीखी दौड़नेवाली, आल राउन्ड पार्ट बजानेवाली, एक सेकण्ड में शिव पूरी और एक सेकण्ड में विष्णुपूरी जानेवाली, मुक्ति और जीवन मुक्ति पानेवाली, संगम युग के स्वदर्शनचक्रधारी, सतयुग के ताजधारी तख़्तधारी छत्रधारी हैं...

धारणा : पुरुषार्थ में कभी भी थकना नहीं है। बड़ी सावधानी से श्रीमत पर चलते रहना है। मूंझना नहीं है। कोई भी पाप कर्म नहीं करना है। सच्चे-सच्चे स्वर्ग में चलने के लिए पवित्र बनने और बनाने की सेवा करनी है। संकल्प, बोल और कर्म रूपी कदम ब्रह्मा बाप के कदम ऊपर कदम रखने हैं । गृहस्थ व्यवहार में रह पुरुषार्थ करना है।

सेवा : सर्विस करनी है। खुद पवित्र बन फिर अपने मित्र-सम्बन्धियों आदि को भी लायक बनाओ, मीठी-मीठी बातें सुनाओ। सेवा में त्रिकालदर्शी का सेन्स और रूहानियत का इसेन्स भरने वाले ही सर्विसबुल हैं।

स्वमान : ब्राह्मण ... ब्रह्मा की मुख वंशावली... ब्रह्माचारी ...

October 7, 2013

आज का वरदान (TODAY'S BLESSING)

पवित्रता की विशेष धारणा द्वारा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने वाले ब्रह्माचारी भव।

May you be a follower of Brahma who experiences supersensuous joy through the special inculcation of purity.

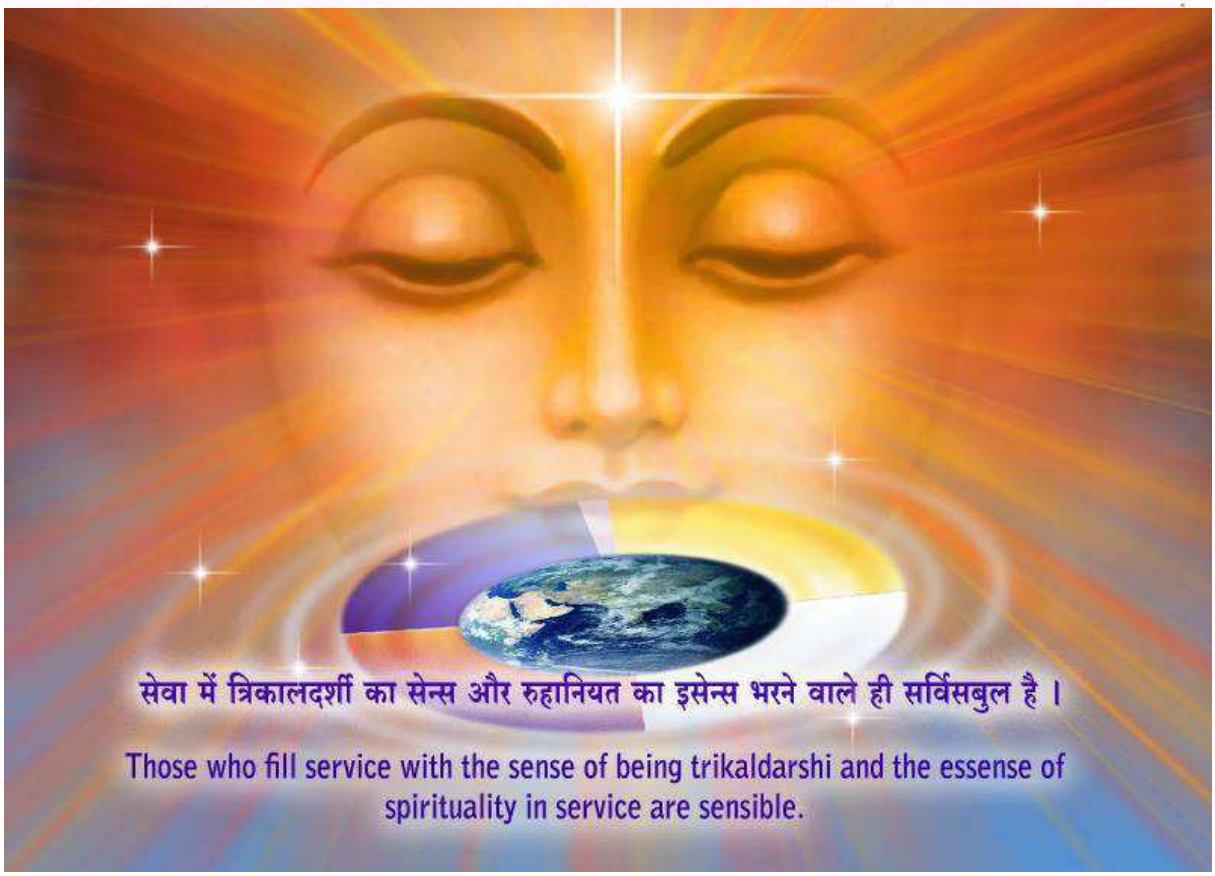

07-10-2013:

Essence: Sweet children, drums of happiness should beat in your heart because the unlimited Father has come to give you the unlimited inheritance.

Question: What illusion has Maya created for human beings due to which they are unable to make effort to go to heaven?

Answer: When people see the pomp of Maya of the final period over the last hundred years, when they see the inventions of aeroplanes, electricity etc., they think that heaven is here. They have wealth, palaces, motor cars and so they think that this is it, that this is heaven for them. This happiness is from Maya and it has put them under as illusion. Because of this they don't make effort to go to heaven.

Song: Mother, o mother, you are the bestower of fortune for all. http://www.youtube.com/watch?v=HCVnpRv7pZE

Essence for dharna:

1. Never become tired of making effort. Be very cautious as you continue to follow shrimat. Never become confused.
2. Never perform any sinful actions. In order to go to the true heaven, do the service of becoming pure and making others pure.

Blessing: May you be a follower of Brahma who experiences supersensuous joy through the special inculcation of purity.

The special inculcation of Brahmin life is purity and this is the special basis for constant supersensuous joy and sweet silence. Purity is not just celibacy but it is to be celibate and a Brahmachari, that is, to be one who places hi steps in the footsteps of the Father's teachings. The steps of the thoughts, words and deeds should be placed in Father Brahma's footsteps. The face and activity of those who are Brahmachari in this way will give the experience of being introverted and in supersensuous joy.

Slogan: Those who fill service with the sense of being trikaldarshi and the essence of spirituality in service are sensible.

07-10-2013: http://www.youtube.com/watch?v=dEh9k6NAjE4

सार:- "मीठे बच्चे – तुम्हारी दिल में ख़ुशी के नगाड़े बजने चाहिए क्योंकि बेहद का बाप तुम्हें बेहद का वर्सा देने आया है"

प्रश्नः- माया ने मनुष्यों को किस भ्रम में भरमा दिया है जिस कारण वे स्वर्ग में चलने का पुरुषार्थ नहीं कर सकते?

उत्तरः- माया का यह जो पिछाड़ी का पाम्प है, 100 वर्ष के अन्दर एरोप्लेन, बिजली आदि क्या-क्या निकल गया है....इस पाम्प को देखते हुए मनुष्य समझते हैं स्वर्ग तो यहाँ ही है | धन है, महल हैं, गाड़ियाँ हैं...बस, हमारे लिए यहाँ ही स्वर्ग है | यह माया का सुख है जो भरमा देते है | इसके कारण ही वे स्वर्ग में चलने का पुरुषार्थ नहीं करते हैं |

गीतः- माता ओ माता.... http://www.youtube.com/watch?v=HCVnpRv7pZE

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) पुरुषार्थ में कभी भी थकना नहीं है | बड़ी सावधानी से श्रीमत पर चलते रहना है | मूंझना नहीं है |
2) कोई भी पापा कर्म नहीं करना है | सच्चे-सच्चे स्वर्ग में चलने के लिए पवित्र बनने और बनाने की सेवा करनी है |

वरदानः- पवित्रता की विशेष धारणा द्वारा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कारने वाले ब्रह्मचारी भव

ब्राह्मण जीवन की विशेष धारणा पवित्रता ही है, यही निरन्तर अतीन्द्रिय सुख और स्वीट साइलेन्स का विशेष आधार है | पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन ब्रह्मचारी और सदा ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर हर कदम चलने वाले | संकल्प, बोल और कर्म रूपी कदम ब्रह्मा बाप के कदम ऊपर कदम हो, ऐसे जो ब्रह्माचारी हैं उनका चेहरा और चलन सदा ही अन्तर्मुखी और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करायेगा |

स्लोगनः- सेवा में त्रिकालदर्शी का सेन्स और रूहानियत का इसेन्स भरने वाले ही सर्विसबुल हैं |